

द्यसाधा रण

EXTRAORDINARY

भाग II-- सब्द 3-- उपलब्द (ii)

PART M—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

स्तं । 9]

मई बिस्ली, सोमचार, जनवरी 13, 1975/पीप 23, 1896

No. 19]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 13, 1975/PAUSA 23, 1896

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलब संकलन के कप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed.

as a separate compilation.

MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 13th January 1975

S.O. 28(E).—Whereas by Orders of the Government of India in the Ministry of Labour No. 1-29011(57)/74-LRIV, dated the 17th December, 1974 and of even number dated the 13th January, 1975 the industrial dispute between the management of Sone Valley Port Land Cement Company Limited, Limestone Quarry, Post Office Baulia, District Robtas and their workmen has been referred to the Central Government Industrial Tribunal, (No. 2) Dhanbad for 'adjudication;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 10 of the industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby prohibits the continuance of the strike in existence in the said establishment in connection with the said dispute on the dates of the above references.

[No. L-29011/57/74-LRIV]

D. BANDYOPADHYAY, Jt. Secy.

श्रम मंत्राख्य

धा देश

नई दिल्ली, 13 जनवरी, 1975

कार गाँव 28 (श्र).—यतः भारत सरकार के श्रम मंद्रालय के श्रादणा सद्भाः एल०-29011(57)/74-एल श्रार० -4, तारीख 17 दिसम्बर, 1974 और इसी संख्या के तारीख 13 जनवरी, 1975 द्वारा सोन वैलि पोर्ट लैण्ड सीमेन्ट कंपनी लि०, चूना-पत्थर खदान. डाकघर, बोलिय जिला रोहताम के प्रवन्धतत्व श्रीर उनके कर्मकारों के बीच श्रीद्योगिक विवाद को केन्द्रीय सरकार श्रीद्योगिक श्रिकरण, (संख्या 2) धनवाद को त्यायनिर्णयन के लिए निर्देशित किया गया है?

श्रव, श्रव, श्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 10 की उप-धारा (3) द्वारा प्रदेस शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय भरकार एनदहारण उपर्यक्षत निर्देशों की तारीखों को उक्त विवाद के सम्बन्ध में उक्त प्रतिष्ठान में विद्यमान हड़ताल के जारी रखे जाने की प्रतिषिद्ध करती है।

> [मं ुल-29011/57/74-गुल ुश्चार०- ः] डी ुवंद्यांपाध्याय, सुयुक्त सुविव ।